रात्रि क्लास 30/5/68 ओमशांति "शिवबाबा को याद करो तो सभी दुःख दूर"
यह है प्रवृत्ति मार्ग। बाल–बच्चे और बाप। यह है मीठा सम्बन्ध। अभी है कड़वा सम्बन्ध। वह है मीठा। कड़वा सम्बन्ध पहले–2 जुटता है काम का; क्योंकि तमोप्रधान रावण राज्य है। रावण को जलाते हैं। क्यों जलाते हैं यह नहीं जानते। समझते हैं परम्परा से जलाते हैं। कब से जलाया यह पता नहीं। तुम बच्चे जानते हो यह रावण दुश्मन है। राम सज्जन है। राम का नाम सुनने से प्यार होता है। रावण का नाम सुनने से छी–छी लगता है। छी–2 रावण का राज्य चलता है आधा कल्प। छी–2 और वाह–2। बच्चे अभी समझ गये हैं। ज्ञान बिगर भक्ति में मनुष्य जनावर से भी बदतर हैं। जनावरों में बदतर होता है बन्दर। जैसे बन्दर में खराब अवगुण हैं वैसे ही मनुष्य में भी इस समय खराब अवगुण हैं। बच्चों को ज्ञान मिला है तब कहते हैं। कोई डॉक्टर है। गुण तो है डॉक्टरी का; परन्तु ज्ञान की बात पर कहेंगे बन्दर है; क्योंकि 5 विकार हैं; परन्तु सीधा कहो तो बिगड़ पड़ेंगे। अर्थ से समझाना है। समझो तुम्हारे पास इन्दिरा गांधी आती है। आखिर वह भी आवेंगे। कोई–2 आते हैं, पूछते हैं (इन्दिरा)गांधी ने यह म्युज़ियम देखा है। उनको भी समझावेंगे। इस समय भारत को काँटों का जंगल कहते हैं। जब डिटी राज्य था तो गार्डेन ऑफ फ्लावर्स कहा जाता था। फील करते हो। युक्ति से तुम बोल सकते हो। देवताओं में गुण जास्ती हैं। मनुष्यों में कम हैं। वह दिन भी आवेगा जब तुम्हारा नाम थोड़ा बाला होगा और जो धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं वह भी निकलेंगे। अनेक धर्म वाले तुम्हारे भाषण पर आते हैं। आकर सुनेंगे तो कोई न कोई निकलेगा। तुम समझ जावेंगे कनवर्ट हो गया है सो निकल आया है। हिन्दू तो सभी हैं ना। आर्य समाजी भी हिन्दू धर्म की संख्या लिखते हैं। हिन्दू धर्म की संख्या कितनी है। तुम भल ब्राह्मण लिखेंगे तो भी हिन्दू में लगा देंगे; (क्योंकि) हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं। धर्म का उनको पता नहीं है। हम जोर लगाते हैं हिन्दू नहीं लिखो। ब्राह्मण तो कुल है; परन्तु उफ्तर में जावेंगे तो फिर भी हिन्दुओं में डाल देंगे। मुसलमान लोग भी इनको काफिर करते हैं; क्योंकि अपने धर्म का पता नहीं है। और सभी को अपने धर्म का पता है। अभी दिन–प्रतिदिन तमोप्रधान बनते जाते हैं तो बुद्धि मलीन होती जाती है। आत्मा तमोप्रधान बनती जाती है तो पुरुषार्थ भी दिन–प्रतिदिन नीचे गिरता जाता है। जैसे बाबा बरादरी का मेज़ बतलाते हैं। आगे बनाते थे। यह भी इनके साथ मिसाल है। बाप समझाते हैं भक्तिमार्ग में सभी समझते हैं शास्त्र आदि पढ़ने से भगवान मिलेगा। यह नहीं समझते भक्ति पूरी होगी तब भगवान मिलेगा। भक्ति का फल कब मिलेगा? एक को मिलेगा या सभी को मिलेंगे। यह कुछ भी पता नहीं है। तुमको बहुत अच्छी खुशी रहनी चाहिए। शिवबाबा तो शान्ति का सागर (है), सुख का सागर है; परन्तु ऐसे नहीं कि कहेंगे कि हर्षितमुख है। हर्षितमुख फिर देवताओं को कहेंगे। उनको अपना मुख है नहीं। हर्षितमुख सबसे जास्ती तुम बच्चों को यहाँ बनना है। जो क्वालिफिकेशन फिर साथ में ले जाते हो। यहाँ तुम्हारा हर्षित रहना शोभता है। ग़रीब हर्षित होंगे तो और ही शोभा है। बाबा ज्ञान देते हैं ग़रीबों को। तो उन्हों को हर्षित हो बाप का परिचय देना चाहिए। लिखते हैं हम बाप को नहीं जानते हैं। अरे! तुम मनुष्य होकर अपने बेहद के बाप को नहीं जानते हो, जो बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। बाप अपने बच्चे को ज़रूर वर्सा देते होंगे। हम आत्माएँ सभी भाई हैं। रहने वाले भी परमधाम में हैं। बाप को हम जानते हैं तब तो पूछते हैं। बाप कहाँ है? परमधाम में। गीता में कृष्ण का नाम लिख दिया है; परन्तु उनको परमपिता नहीं कहते। शिव जयन्ति होती है; परन्तु वह क्या करते हैं यह नहीं जानते हैं। तुम जानते हो शिवबाबा बेहद का बाप आकर सभी बच्चों को मीठा मुख करेंगे। जैसे बाप बच्चों के लिए टोली ले आते हैं ना। घर में आवेंगे बच्चों के लिए कुछ न कुछ ले आवेंगे। बेहद का बाप भी घर में आया हुआ है। पराये घर, पराई राजाई में आये हैं। तुम बच्चों के लिए क्या ले आऊँ? बाबा को मालूम है तीरी पर स्वर्ग ले आया हूँ। बच्चों को बैठ पवित्र बनाकर लायक बनाता हूँ। स्वर्ग का मालिक तो बनेंगे फिर पद का फ़र्क है। जितना जो

पुरुषार्थ करेंगे। यह तुम बच्चे जानते हो। तुम स्टूडेन्ट हो। हरेक अपन को स्टूडेन्ट समझे तो अच्छा है। यह हमारा है उद्देश्य। हमको यह बनना है। बाप हमको यह बनने लिए पढ़ाते हैं। तुम यह तो जानते हो ना हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। पूछा जाता है क्या बनेंगे तो सभी कहते हैं लक्ष्मी–नारायण बनेंगे। कम की बात ही नहीं। तुम बच्चे अभी समझू–सयाना बने हो। ऊँच ते ऊँच भगवान ज़रूर ऊँच बुद्धि ही बनावेंगे ना। तुम्हारी आत्मा को कितना ऊँच बनाते हैं। आत्मा में मन–बुद्धि सब कुछ है। परमात्मा की बड़ी महिमा है। सतयुग में तो यह बातें होती ही नहीं। पुरानी दुनियां और नई दुनियां के संगम पर तुम अभी समझते हो। बाप समझाते हैं तुमको आपस में भी यही बैठ वर्णन करना चाहिए। बेहद का बाप कैसे हमको बेहद का मालिक बनाते हैं। तुम प्रदर्शनी निकालेंगे ना। यह लिखना पड़े शिवबाबा याद है और विश्व का मालिकपने का वर्सा याद है? जहाँ–तहाँ यह लगा हुआ हो। पर्दों में भी यह लिखो शिवबाबा और स्वर्ग़ की बादशाही याद है? प्रदर्शनी आदि करते हो तो बच्चों का ख़्यालात आदि चलता रहेगा क्या करना चाहिए। अगर प्रभात फेरी भी निकालनी होगी तो ऐसे ही निकालेंगे। स्लोगन्स भी याद करेंगे। यह तो जानते हो इतनी मेहनत की रिज़ल्ट क्या निकलती है। तुम लिखते हो इतने आते नहीं हैं; परन्तु तुम्हारी प्रजा बहुत बनी। जिनको अच्छा लगा आगे चलकर आवेंगे। बच्चों को निश्चय है हम जो मेहनत करते हैं अपनी विश्व की बादशाही ज़रूर स्थापन करेंगे। अनेक बार स्थापन की है। पुरुषार्थ कर अपन को राजाई पद का लायक बनाया है। बाबा तो सिर्फ़ पढ़ाते हैं। युक्तियाँ समझाते हैं।

बाप कहते हैं मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारी आत्मा की बैटरी भरेगी। याद का घृत पड़ता रहेगा उसी अनुसार तुम्हारा पद होगा। यहाँ कोई शास्त्र की बात ही नहीं। यहाँ ..... बात। मुझे ज्ञान का सागर कहते हैं। मैं कोई शास्त्र पढ़ता हूँ क्या? बच्चे समझते हैं बाबा मुझे अपना परिचय भी दिया है। हम थोड़े ही जानते थे हमारी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट है। 84 लाख होता हो मूँझ जाते। 84 का ठीक है। इतनी छोटी सी आत्मा पार्ट बजाती ही रहती है। छोटी–2 कह मूँझना भी न है। शिवबाबा भल बड़ा लिंग समझो। बाबा मना नहीं करते हैं। बुद्धि में ज्ञान है वह तो बिन्दी है। कहते भी हैं चमकता है ग़जब सितारा। करते एक हैं कहते दूसरा हैं। झूठ खण्ड में है ही झूठ। सच्च खण्ड में सच्च। वह सेमी झूठ। वह बिल्कुल झूठ। सतयुग में बिल्कुल सच्च। फिर सेमी सच्च। बच्चों को सारा सा० होता है अर्थात् पहचान मिलती है। अभी बाप कहते हैं पतित–पावन को याद करो। याद नहीं करते हो गोया रहम नहीं करते हो। न पढ़ेंगे, पढ़ावेंगे तो अपन को तिलक नहीं देते हो। करना तुमको ही है। मांगने का प्रश्न ही नहीं उठता। बाप सभी कुछ आपे ही देते हैं। माँगने की क्या दरकार रखी है। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।